February 2022 E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,
तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATIO

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
०१	'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. अशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवाले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. निलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. निलेश देशमुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिरे	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश पगार	१००

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना

प्रा. डॉ. योगिता अपूर्व हिरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
लोकनेते व्यंकटराव हिरे महाविद्यालय, पंचवटी-नाशिक

प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
म. स. गा महाविद्यालय, मालेगांव कैंप,
मालेगांव.

प्रस्तावना :-

कथाकार, नाटककार, रंग-चिंतक हृषीकेष सुलभ कथा-लेखन, नाट्य-लेखन, रंगकर्म के साथ-साथ सांस्कृतिक आन्दोलनों में भी सक्रिय रहे हैं। शायद यही वजह रही होगी बिरसा मुंडा की जीवनी पर रचना रचने की । आदिवासियों को अपने जल, जंगल और जमीन से प्यार करने वाले समाज पर अंग्रेज सरकार तथा जमींदार, सेठ-साहूकारों ने जमकर अत्याचार किया। अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासियों के संघर्ष के प्रमुख नायक थे बिरसा मुंडा। 'धरती आबा' कहे जाने वाले बिरसा मुंडा के जीवन संघर्षों को केंद्र में रखकर लिखा गया नाटक है 'धरती आबा'। इस नाटक में दिखाया गया है कि अंग्रेजों के द्वारा आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार और भेदभाव को देखकर बिरसा मुंडा विद्रोह करते हैं। बिरसा मुंडा द्वारा अपने आदिवासियों मुंडाओं को संगठित कर अपने अधिकारों से सचेत किया गया है भगवान बिरसा मुंडा स्कूल में हो रहे भेदभाव से क्रांति की ओर उन्मुख होते हैं। वह मुंडाओं के प्रति अपमानजनक टिप्पणियों का विरोध करते हैं और स्कूल छोड़ देते हैं। स्वयं जागरूक होकर उन्होंने यह जागरूकता पूरे समाज में फैलाने की कोशिश की। वह मुंडाओं के भीतर गुलामी से लड़ने के लिए साहस पैदा करते हैं। वह आंदोलन को विदेशी शासन से मुक्ति के संघर्ष में बदल देते हैं। वंचितों के न्याय के प्रति जागरूकता, सूखा, अकाल, भूख और महामारी से जूझते हुए ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौति देनेवाले मुंडाओं के नायक बिरसा की मृत्यु जेल में होती है।

'धरती आबा' नाटक बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और उलगुलान आंदोलन के माध्यम से हमारे स्वतंत्रता संग्राम के पन्नों को खोलता है। उनके उलगुलान और बलिदान ने उन्हें 'भगवान' बना दिया। हालात आज भी वैसे ही हैं जैसे बिरसा मुंडा के वक्त थे। परिस्थितियां काफी कुछ बदल गई हैं लेकिन कहीं-कहीं वातावरण वही है। अपने मूल स्थान से आज भी आदिवासी खदेड़े जा रहे हैं, दिकू अब भी हैं। जंगलों के संसाधन तब भी असली दावेदारों के नहीं थे और अब भी नहीं हैं।

कठोर जीवन जीने वाले और अपने आप में संतुष्ट आदिवासियों का संघर्ष अट्ठारहवीं शताब्दी से चला आ रहा है। 1766 के पहाड़िया-विद्रोह से लेकर 1857 के ग़दर के बाद भी आदिवासी संघर्षरत रहे। संघर्ष इनके खून में बसा है।सन 1895 से 1900 तक बिरसा मुंडा का महाविद्रोह 'उलगुलान' चला।आदिवासियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए बिरसा मुंडा ने काफी कोशिश की। आदिवासियों को लगातार जल-जंगल-ज़मीन और उनके प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल किया जाता रहा था और वे इसके खिलाफ आवाज उठाते रहे। 1895 में बिरसा ने अंग्रेजों की लागू की गयी ज़मींदारी प्रथा और राजस्व-व्यवस्था के ख़िलाफ़ लड़ाई के साथ-साथ जंगल-ज़मीन की लड़ाई छेड़ी थी। बिरसा ने सूदखोर महाजनों के ख़िलाफ़ भी जंग का ऐलान किया था। ये महाजन, जिन्हें वे दिकू कहते थे, क़र्ज़ के बदले उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लेते थे। यह मात्र विद्रोह नहीं

Scanned with CamScanner

था। यह आदिवासी अस्मिता, स्वायतत्ता और संस्कृति को बचाने के लिए संग्राम था। बिरसा ने इस संग्राम को क्रांति का रूप दिया।

बिरसा मुंडा का जन्म 1875 में रांची जिले के उलीहातु नामक स्थान में 15 नवम्बर 1875 को हुआ। बिरसा मुंडा के सम्मान में ही झारखंड का स्थापना दिवस 15 नवंबर को मनाया जाता है। बिरसा 'मुंडा' समाज से थे, जो कि भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है। बिरसा के पिता सुगना मुंडा कृषक थे और उनकी मां का नाम करमी था।उनका बचपन गरीबी और अभाव में बीता। अभाव में पले बढ़े बिरसा को अपनी जाति के दुख - दर्द , संवेदनाओं की अनुभूति थी। इसलिए क्रांति के लिए उन्हें विशेष प्रेरणा की आवश्यकता नहीं पड़ी।

बिरसा मुंडा प्रगतिशील विचारधारा के थे वह अपने आदिवासी भाइयों को परंपरागत रूढि, रीति-रिवाजों अंधविश्वासों से बाहर निकालना चाहते थे। मुंडा समाज अपने अज्ञानता और अशिक्षा के कारण व अंधविश्वासों में जकड़े हुए हैं। किसी भी संकट से बचने के लिए वे भूत- प्रेत,साधू-ओझा भगवान इन पर भरोसा करते हैं बिरसा मुंडा उन्हें इस अंधविश्वास अंधकार से बाहर निकालना चाहते हैं।वे सचेत करते हुए कहते हैं " बंद कर दो उसे चावल -मुर्गी -खस्सी देना भूत प्रेत और मंत्र में भरोसा मत करो बुरा समय आ रहा है इसलिए अपने को मजबूत करो मन का अंधेरा हटाकर इसे बुरे समय से लड़ने के लिए तैयार हो जाओ"।(१)

जो आदिवासी किसी महामारी को दैवीय प्रकोप मानते थे उनको वे महामारी से बचने के उपाय समझाते। मुंडा आदिवासी हैजा, चेचक, सांप के काटने बाघ के खाए जाने को ईश्वर की मर्ज़ी मानते, बिरसा उन्हें सिखाते कि चेचक-हैजा से कैसे लड़ा जाता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, मौलिक अधिकारों के प्रति जागृत किया।भूत - प्रेत, गंडे-तावीज ,आदि से आदिवासियों को बाहर निकालने का प्रयास किया।धीरे-धीरे बिरसा का ध्यान मुंडा समुदाय की ग़रीबी की ओर गया। बिरसा अपने आदिवासी समाज के दुख -पीड़ा का दर्द देखकर छटपटा था, बेचैन होता था। उससे उनका दुख नहीं देखा जाता था। उनकी संवेदनाओं की अनुभूति बिरसा मुंडा को थी।आदिवासियों का जीवन तब अभावों से भरा हुआ था। न खाने को रोटी थी, न पहनने को कपड़े। बहुत समस्याओं से जूझते हुए लोगों को अपने प्राणों से प्रिय जंगल जमीन से भी बेदखल किया जाने लगा। अपने मां करमी को कहता है," मां! मां !यह जंगल मेरे हैं यह धरती मेरी है मां! यह नदियां..... यह पहाड़, सब मेरे हैं मैंने धनी बूढ़े से वायदा किया है कि इन्हें छीन कर वापस लाऊंगा। मुंडाओंको अपने गांवों से बेदखल नहीं होने दूंगा।"(२)

एक तरफ ग़रीबी थी और दूसरी तरफ 'इंडियन फारेस्ट एक्ट' 1882 ने उनके जंगल छीन लिए थे। जो जंगल के दावेदार थे, वही जंगलों से बेदख़ल कर दिए गए। यह देख बिरसा ने हथियार उठा लिए और इस तरह उलगुलान शुरू हो गया था। बिरसा मुंडा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई का पहले महानायक थे बिरसा मुंडा को अपने लोगों से इस बात का पता चलता है कि उनसे जंगल जमीन सब छीन रहे हैं अब आदिवासियों को जंगल से न तो लकड़ी मिलेगी अन्ना तो महुआ नमधु और ना ही शिकार करने देंगे उन्हें जंगल में घुसने तक का अधिकार नहीं रहा था यह बात ज्ञात होने पर बिरसा जंगल पर दावा करने वाली अर्जी देने जाता है वहां पर बाबू अर्जी लेने से इनकार करता है । मुंडा की खिल्ली उड़ाता है। इस बात से क्रोधित होकर बिरसा बाबू से कहता है, "साहब को आप..... महाजन को तुम... और मुंडा को तू....। नीच समझता है मुंडा को। सुन रे दिकू, मेरा नाम है बिरसा।बिरसा मुंडा। ठीक से बात कर मैं साहब और सरकार से नहीं डरता।"(३)

विदेशी शक्तियों के लगातार आक्रमण से भारत के मूलनिवासी ही अपने अधिकारों से वंचित अपमानित तिरस्कृत जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा उनके भोले भाले और शिक्षा अज्ञानता का लाभ उठाकर हर किसी ने आदिवासियों को खदेड़ना चाहा है जंगल से आदिवासी अपने पेट की आग बुझाते थे। जानवरों को पालते थे जंगल ही उनके उदरनिर्वाह का साधन है ।वहां से इन्हें बेदखल किया जाएगा तो यह लोग कहां जाएंगे

Scanned with CamScanner

क्या करेंगे ?क्या खाएंगे ?इससे आदिवासीयों के अस्तित्व को ही खतरा होगा। इस खतरे से भांपकर बिरसा को आदिवासियों के भविष्य की चिंता होती हैं।लोगों में बढ़ रहे असंतोष ने आदिवासी रीति रिवाजों और प्रथाओं को भी प्रभावित किया, जिसे मूल मानकर बिरसा ने आन्दोलन की शुरुआत की। और इसके लिए एक नए पंथ की शुरुआत की, जिसका मूल उद्देश्य दिकुओं, जमींदारों और अंग्रेजी शासन को चुनौती देना था। आज बिरसा मुंडा को इसी पंथ की वजह से जाना जाता है। इस पंथ को 'बिरसाइट' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने खुद को भगवान घोषित किया और लोगों को उनका खोया राज्य लौटाने का आश्वासन दिया। साथ ही उन्होंने यह घोषणा की कि मुंडा राज का शासन शुरू हो गया है। निवासियों के जननायक को वे धरती आबा कहते हैं आभा का अर्थ है भगवान उन्हें ऐसा लगता है बिरसा मुंडा के रूप में कोई भगवान ही हमें हमारा इस संकट से बचाने आया है बिरसा से आदिवासियों के इस भोले भोले मन को समझाता है वह उन्हें अपने पर होने वाले अन्याय अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करने की प्रेरणा देते हूं कहता है," खत्म नहीं होगा आदिम खून है हमारा काले लोगों का खून है यह भूख लांछन अपमान दुख पीड़ा ने मिलजुल कर बनाया है इस खून को इसी खून से जली है उलगुलान की आग यह कभी नहीं बुझेगी कभी नहीं(४)

बिरसा ने अपने आदिवासियों के भीतर चेतना जागृत कर स्वतंत्रता की चिंगारी जलाई थी अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा प्रदान की थी वे कहते हैं, "जंगल हमारे थे.... नदियां हमारी थी, धरती हमारी थी, दिक्कू आए,.. जमींदार आए,..मिशन आया,.. चर्च आया,.. अंग्रेज आए,.. सिपाही आए,.. कचहरी आयी सब पसरते गए और हम मुंडा लोग अपने पैर सिकोड़ते रहे।"(५)

बिरसा एक दूरदर्शी थे, जिनका इतिहास आने वाले समय में आज़ादी और स्वायत्ता की कहानी के रूप में जाना जायेगा। ब्रिटिश सरकार के दौरान गैर आदिवासी (दिकु), आदिवासियों की जमीन हड़प रहे थे और आदिवासियों को खुद की जमीन पर बेगारी मजदूर बनने पर मजबूर होना पड रहा था।बिरसा मुंडा के समय में उपस्थित परिस्थितियां बहुत कुछ आज भी वर्तमान है। 1895 के दौरान अकाल की स्थिति में उन्होंने बकाया वन राशि को लेकर अपना पहला आन्दोलन शुरू किया। मुंडा समाज को ऐसे ही मसीहा का इंतजार था. उनकी महानता और उपलब्धियों के कारण सभी उन्हें "धरती आबा" यानि 'पृथ्वी के पिता' के नाम से जानते थे। लोगों का यह भी मानना था कि बिरसा के पास अद्भुत शक्तियां हैं जिनसे वे लोगों की परेशानियों का समाधान कर सकते हैं। अपनी बीमारियों के निवारण के लिए मुंडा, उरांव, खरिया समाज के लोग बिरसा के दर्शन के लिए 'चलकड़' आने लगे। भारतीय समाज की यह विशेषता है कि यहां की जनता हर विशिष्ट व्यक्ति को भगवान मान लेती है। कई चमत्कार इन महान आत्माओं के साथ जोड़ दिए जाते हैं। बिरसा मुंडा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। पलामू जिले के बरवारी और छेछारी तक आदिवासी बिरसाइट – यानि बिरसा के अनुयायी बन गए।

बिरसा मुंडाओं के प्रति अपमानजनक टिप्पणियों के कारण ही मिशन स्कूल नहीं छोड़ देते, बल्कि जनजातीय देवताओं और प्रचलित हिंदू देवताओं से संबंधित कर्मकांडों के प्रति अनास्था भी प्रकट करते हैं। वह धर्म के महत्व और स्वरुप की अपनी निजी व्याख्या करते हैं और एक ऐसे धर्म की स्थापना करते हैं, जहाँ भय नहीं विश्वास है। बिरसा कहता है," नहीं पूजूंगा अब किसी को। .....किरस्तान बनकर देख लिया। यीशु की प्रार्थनाओं में अब नहीं उलझने वाला मैं। तुलसी की पूजा नहीं.... उस काले कृष्ण की भी पूजा नहीं।... और तुम्हें भी नहीं पूजूंगा सिंबोडा ... तुम सबों ने मिलकर अंधेरा किया है चारों तरफ़।... नहीं डरने वाला अब मैं।... तुम्हारे सारे प्रेत झूठे हैं सिंबोडा,... झूठे।"(६)

संख्या और संसाधन कम होने की वजह से बिरसा मुंडा ने छापामार लड़ाई का सहारा लिया। लेकिन यह उनके निष्ठा का ही प्रभाव था कि रांची और उसके आसपास के इलाकों में पुलिस उनसे आतंकित थी। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए पांच सौ रुपये का इनाम रखा था जो उस समय के लिए बहुत बड़ी रकम थी। बिरसा

Scanned with CamScanner

मुंडा और अंग्रेजों के बीच अंतिम और निर्णायक लड़ाई 1900 में रांची के पास दूम्बरी पहाड़ी पर हुई थी। हज़ारों की संख्या में मुंडा आदिवासी बिरसा के नेतृत्व में लड़े थे। आदिवासियों के तीर-कमान और भाले अंग्रेजों के अत्याधुनिक बंदूकों और तोपों का सामना आखिर किस प्रकार करते? बहुत सारे आदिवासी बेरहमी से मार दिए गए। 25 जनवरी, 1900 के स्टेट्समैन अखबार के मुताबिक इस लड़ाई में 400 लोग मारे गए थे। अंग्रेज़ जीते तो सही पर बिरसा मुंडा हाथ नहीं आए। लेकिन जहां बंदूकें और तोपें काम नहीं आईं वहां पांच सौ रुपये ने काम कर दिया। बिरसा की ही जाति के लोगों ने □500 के लालच में उन्हें पकड़वा दिया। यह उनकी जाति की बेवसी थी।

"धरती आबा" का यह संवाद लगता है जैसे इसी कविता का जवाब है:- "लौटकर आऊंगा मैं..जल्द ही लौटूंगा मैं अपने जंगलों में, अपने पहाड़ों पर...मुंडा लोगों के बीच फिर आऊंगा मैं। तुम्हें मेरे कारण दुःख न सहना पड़े इसलिए माटी बदल रहा हूँ मैं...उलगुलान ख़त्म नहीं होगा। आदिम खून है हमारा। ...काले लोगों का खून है यह। भूख... लांछन... अपमान... दुःख... पीड़ा ने मिल-जुलकर बनाया है इस खून को। इसी खून से जली है उलगुलान की आग। यह आग कभी नहीं बुझेगी...कभी नहीं।.... जल्दी ही लौटकर आऊंगा मैं" बिरसा मुंडा का यह संवाद नाटक धरती आबा का मुख्य कथ्य है।

छोटानागपुर के जंगलों में मुंडा, हो, उराँव, संथाल आदि जनजातियाँ युगों से निवास करती रही हैं। ये प्रकृति के सहचर रहे हैं तथा प्रकृति से इनके आत्मीय संबंध ने इनके जीवन-बोध को निश्छल मानवीय संवेदनाओं से भर दिया है। अपनी परम्पराओं, विश्वासों, आस्थाओं और अपनी सहज-सरल जीवन-पद्धति के कारण आदिवासियों ने धरती को, जल को, जंगल को माँ की तरह देवी देवता की तरह पूजा है और धरती की सम्पदा की हर संभव रक्षा की है। आदिवासियों के सरनेम किसी न किसी जीव जंतु के नाम पर होते हैं और वह उन जीव जंतुओं के संरक्षक होते हैं। इसके बावजूद इन्हें लगातार तथाकथित सभ्य समाज के प्रपंचों का शिकार होना पड़ा है। प्रपंचों से दूर यह समाज तथाकथित सभ्य समाज के स्वार्थ की पूर्ति के लिए जीवन की निजता को नष्ट होता देख रहा है । इस अन्याय के विरुद्ध सिधु-कानू, तिलका मांझी और बिरसा मुंडा जैसे नायकों ने संघर्ष किया और अपनी जातीय चेतना, परम्परा, धरती और मनुष्य की गरिमा को स्थापित किया। वर्गीय चेतना के जागृत हुए बिना क्रांति संभव नहीं है इसलिए सर्वप्रथम उन लोगों ने जातीय चेतना जगाई।

धरती आबा" नाटक बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और उलगुलान आंदोलन के माध्यम से हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के कई ऐसे पन्नों को खोलता है, जिनमें समाज के अंतिम कतार में खड़े मनुष्य की चेतना शामिल है। बिरसा के संघर्ष भरे जीवन में मुंडाओं के लिए स्वप्न हैं। जनजातीय समाज के नायक बिरसा मुंडा पूरे भारतीय समाज के नायक के रूप में उभरते हैं और गुलामी के कठिन जीवन से मुक्ति के लिए आंदोलन आरम्भ करते हैं। वह मुंडाओं को संगठित करते हैं और नई सामाजिक व्यवस्था तथा आज़ादी के लिए लड़ते हैं। पहली बार की गिरफ्तारी और जेल की सज़ा काट कर लौटने के बाद वह मुंडाओं को नए सिरे से संगठित कर आंदोलन करते हैं।

करमी बिरसा की माँ है, पर वह धरती का प्रतीक बन जाती है। भगवान और धरती के आबा (पिता) के रूप में उनका संघर्ष आज भी हमारे जीवन को प्रेरित करता है। बिरसा मुंडा का नायकत्व मनुष्य के मुक्ति-संघर्ष का धवल प्रतीक है। धरती आबा नाटक में तत्कालीन शासन और अंग्रेजों द्वारा बिरसा के सन्दर्भ में फैलाई तथा सरकारी अभिलेखों में दर्ज की गई रूढ़ियों से परे जाकर भी बहुत कुछ रचने का प्रयास किया गया है। संजय कुमार बलौदिया कहते हैं कि," झारखंड में बिरसा की बेड़ियोंवाली तस्वीरें व प्रतिमाओं को ही अपनी प्रेरणा का स्रोत मानते हैं और इतिहास से खुद को जुड़ा महसूस करते हैं महाश्वेता देवी ने उपन्यास लिखा है तो आजादी के

Scanned with CamScanner

महानायक के लिए आदिवासी समुदाय में गीत अभी है आदिवासी साहित्य में उलगुलान की ध्वनि आज भी गूंजती है।"(७)

धरती आबा बिरसा मुंडा आम आदिवासियों के दिलों में आज भी जिंदा हैं कठिनाइयों से संघर्ष के दौर में उनका नाम उन्हें संबल व ऊर्जा देता है पर ज्यादातर यह मानते हैं कि भगवान बिरसा का सपना पूरी तरह साकार नहीं हुआ है उन्होंने अपने हिस्से की लड़ाई लड़ी और भावी पीढ़ी को यह प्रेरणा दिया कि अन्याय के खिलाफ ईमानदारी और प्रतिबद्धता से लड़ेंगे, तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्राध्यापक प्रो हरि उरांव कहते हैं कि बिरसा मुंडा पूरे झारखंडी आदिवासी समाज के प्रतीक हैं, पर आज उनके नाम का राजनैतिक और व्यावसायिक उपयोग ज्यादा हो रहा है उन्होंने आदिवासी समाज के लिए जो सपना देखा था, वह अब तक पूरी तरह साकार नहीं हुआ है उन्होंने सशक्त, विकसित व शोषण मुक्त आदिवासी समाज की परिकल्पना की थी उन्होंने हमें राह दिखायी है और अब यह हमारा कर्तव्य है कि उनकी तरह हर अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध करें।

"युग प्रवर्तक और आदिवासी समुदाय के मार्गदर्शक बिरसा मुंडा के रूप में उनका संघर्ष आज भी हमारे जीवन को प्रेरित करता है बिरसा मुंडा का नायक अथवा मनुष्य के मुक्ति संघर्ष का धवल प्रतीक हैं बिरसा मुंडा का जनांदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल माना जाता है इसीलिए नई पीढ़ी के लिए उनकी संघर्ष गाथा प्रेरणादाई है।"(८)

बिरसा मुंडा आदिवासियत के प्रतीक हैं उनका सपना अब तक पूरा नहीं हुआ है यदि आज वह हमारे बीच होते, तो लोगों की स्थिति और बेहतर होती या उनका प्रतिकार जारी रहता उन्होंने जिस भावना के साथ अन्याय व शोषण के खिलाफ संघर्ष किया था, वह भावना आज कम दिखती है यदि हालात सुधारना चाहते हैं, तो उनकी तरह ईमानदारी और प्रतिबद्धता की जरूरत है कई लोग उनका नाम सिर्फ मजबूरी या औपचारिकतावश लेते हैं, जो नहीं होना चाहिए उनकी भावना को आत्मसात करने की आवश्यकता है। भगवान बिरसा हमारे मार्गदर्शक हैं उन्होंने युवाओं को आदिवासी समाज के लिए कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी का सबक दिया है आम लोगों की खुशहाली का सपना देखना सिखाया है जरूरी है कि आज के युवा उनकी तरह सपना देखना और संकल्प के साथ आगे बढ़ना सीखें।

आज के ज्यादातर युवाओं में उनकी तरह सोच और नि:स्वार्थ भावना नजर नहीं आती यदि उनकी सोच पर चलेंगे तो पूरा आदिवासी समाज, पूरा झारखंड खुशहाल हो सकता है उन्होंने समाज के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया उनके कार्यों को आगे बढ़ाने की जरूरत है वह आदिवासी युवाओं के प्रेरणा के स्रोत हैं। बिरसा मुंडा ने अंगरेज सरकार और जमींदारों के शोषण के खिलाफ संघर्ष किया लोगों को बचाने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की शोषितों की आवाज बने झारखंड के निर्माण में और यहां के लोगों को हक-अधिकार दिलाने में उनकी बड़ी भूमिका रही है पर उनका सपना पूरी तरह साकार नहीं हुआ है ।उन्होंने जल, जंगल व जमीन की लड़ाई लड़ी और इसमें अपने प्राणों की आहूति दे दी आज भी वह अपनी संस्कृति व धरोहरों की रक्षा और शोषण के खिलाफ लड़ाई में हमारे प्रेरणा स्रोत हैं वे आम आदिवासी के दिल में आज भी जिंदा हैं।

यदि एक कोई नाम है जिसे भारत के सभी आदिवासी समुदायों ने आदर्श और प्रेरणा के रूप में स्वीकारा है, तो वह हैं "धरती आबा बिरसा मुंडा"। ब्रिटिश राज, जमींदारों, दिकुओं के खिलाफ बिरसा के विद्रोह ने स्वायत्ता और स्वशासन की मांग की। बिरसा मुंडा के संघर्ष के फलस्वरूप ही छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट, 1908 (CNT) इस क्षेत्र में लागू हुआ जो आज तक कायम है। यह एक्ट आदिवासी जमीन को गैर आदिवासी में हस्तांतरित करने में प्रतिबन्ध लगाता है और साथ ही आदिवासियों के मूल अधिकारों की रक्षा करता है।

ब्रिटिश काल में सरकार की नीतियों के कारण आदिवासी कृषि व्यवस्था, सामंती व्यवस्था में बदल रही थी। चूंकि आदिवासी कृषि प्रणाली अतिरिक्त या 'सरप्लस' उत्पादन करने के काबिल नहीं थी, सरकार ने गैर

Scanned with CamScanner

आदिवासियों को कृषि के लिए आमंत्रित करना शुरू कर दिया। इस प्रकार आदिवासियों की जमीन छीनने लगी. यह गैर आदिवासी वर्ग, लोगों का शोषण कर केवल अपनी संपत्ति बनाए में उत्सुक थे।

मुंडा जनजाति छोटा नागपुर क्षेत्र में आदिकाल से रह रहे थे और वहां के मूल निवासी थे। इसके बावजूद अंग्रेजी सरकार के आने पर आदिवासियों पर अनेक प्रकार के टैक्स लागू किये जाते थे। इस बीच जमींदार आदिवासियों और ब्रिटिश सरकार के बीच मध्यस्त का काम करने लगे और आदिवासिओं पर शोषण बढ़ने लगा। जैसे ही ब्रिटिश सरकार आदिवासी इलाकों में अपनी पकड़ बनाने लगी, साथ ही हिन्दू धर्म के लोगों का प्रभाव इन क्षेत्रों में बढ़ने लगा। न्याय नहीं मिल पाने के कारण आदिवासियों के पास केवल खुद से संघर्ष करने का रास्ता मिला। बिरसा ने नारा दिया कि "महारानी राज तुंदु जाना ओरो अबुआ राज एते जाना" अर्थात '(ब्रिटिश) महारानी का राज खत्म हो और हमारा राज स्थापित हो'। इस तरह बिरसा ने आदिवासी स्वायत्ता, स्वशासन पर बल दिया। आदिवासी समाज भूमिहीन होता जा रहा था और मजदूरी करने पर विवश हो चुका था। इस कारण बिरसा के आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार को आदिवासी हित के लिए कानून लाने पर मजबूर किया और साथ ही आदिवासियों का विश्वास जगाया की 'दिकुओं' के खिलाफ वे खुद अपनी लड़ाई लड़ने के काबिल हैं. बिरसा ने लोगों को एकजुट करने के लिए चयनित एवं गुप्त स्थानों में सभा करवाई, प्रार्थनाओं को रचा और अंग्रेजी शासन के अंत के लिए अनुष्ठान कराए।

निष्कर्ष:-

आदिवासी जीवन की समस्याओं पर झारखंड के मशहूर बहरहाल बिरसा मुंडा के संगठनात्मक कौशल ने लोगों को प्रेरित किया और उन्हें जमींदारों, ठेकेदारों के चंगुल से बचाया और साथ ही आदिवासी जमीन पर पूर्ण स्वामित्व की बात रखी। बिरसा मुंडा के इतिहास से हमें आज के संघर्ष के लिए अनेकों सीख मिलती है। जिस तरह आज आदिवासियों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं और उपनिवेशवादी नीतियाँ सरकारी नीतियाँ बन रही हैं, बिरसा का इतिहास और उनके सिद्धांत भविष्य के आदिवासी आन्दोलनों के लिए एक ऐतिहासिक उदाहरण पेश करता रहेगा। बिरसा मुंडा ने आदिवासी समुदाय में चेतना फेंकने का सबसे सशक्त कार्य मुक्ति दिलाने एवं उनकी अस्मिता जगाने का कार्य बिरसा मुंडा ने किया आदिवासी समाज का वह दीपस्तंभ माने जाते हैं। इस महान क्रांतिकारी का अतुलनीय योगदान युग प्रवर्तक के रूप में आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरणादायी रहेगा।

संदर्भ सूची:-

१) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-३८
२) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-३३
३) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-२९
४) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-१९
५) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-२३
६) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ-३१
७) संजय कुमार बलौदिया- बिरसा मुंडा शौर्य का पर्याय, पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार ,नई दिल्ली- 9 ,अगस्त 2016 पृष्ठ -1
८) शोध संचयन- भाग 9 अंक 2, 15 जुलाई 2018 -डॉ.सविता चौधरी

Scanned with CamScanner